योह भी खूब रही

हरियाणवी हास्य कथा

सुखदेव मल्होत्रा

मोधर गाम की बात सै। भल्ले राम गाम में कुँए पे नहाण गया होया था। चाणचक उस की बालटी हाथ ते छूट गी अर जा गिरी कुँए के बीच।

बालटी ढूँढण की घणी कोसिस करी गई। कई दिनाँ लग ढूँढते-ढूँढते हम सारे हलकान हो लिए थे। पर के कहवाँ, ओ बालटी न मिली। इसे में हम के करदे?

चाणचक, एक दिन अपणे गुसाईं जी उड़े कुएँ धोरे आज पहुँचे। म्हाँ ने देख के न्यूँ कहण लागे, "क्यूँ भई, न मिली ओ बालटी?"

तंद लटकू ने नाड़ हिला के कहया, "न मिली, के कराँ।"

"जरूर-प-जरूर पड़ौसी गाम आड़े-ई लेगे होएँगे। जगदीस की गाय बी बोए खोलके लेगे थे। रूलदू के खेताँ में ते न्यार बी बोए काटके लेगे थे न? के-के गिणाऊँ? म्हारे गाम की सगरी चोरी की चीजाँ उसे गाम में पाया करेंहैं।" गुसाई ने कह्या था।

सुणले ई रामधन बोल्या, "पण ताऊ, न्यू ले बता, कुएँ में पड़ी बालटी ओ क्यूँ कर लेगे होवेंगे?"

गुसाईं जी ने सटाक दे सी जवाब देते होये कहया, "उण लोगाँ के लिए यो कोए मुसकले काम सै? ओ मरे बटे धणेई चालबाज सैं। लेगे हॉएँगे धरती के तले-तले ते ई।"

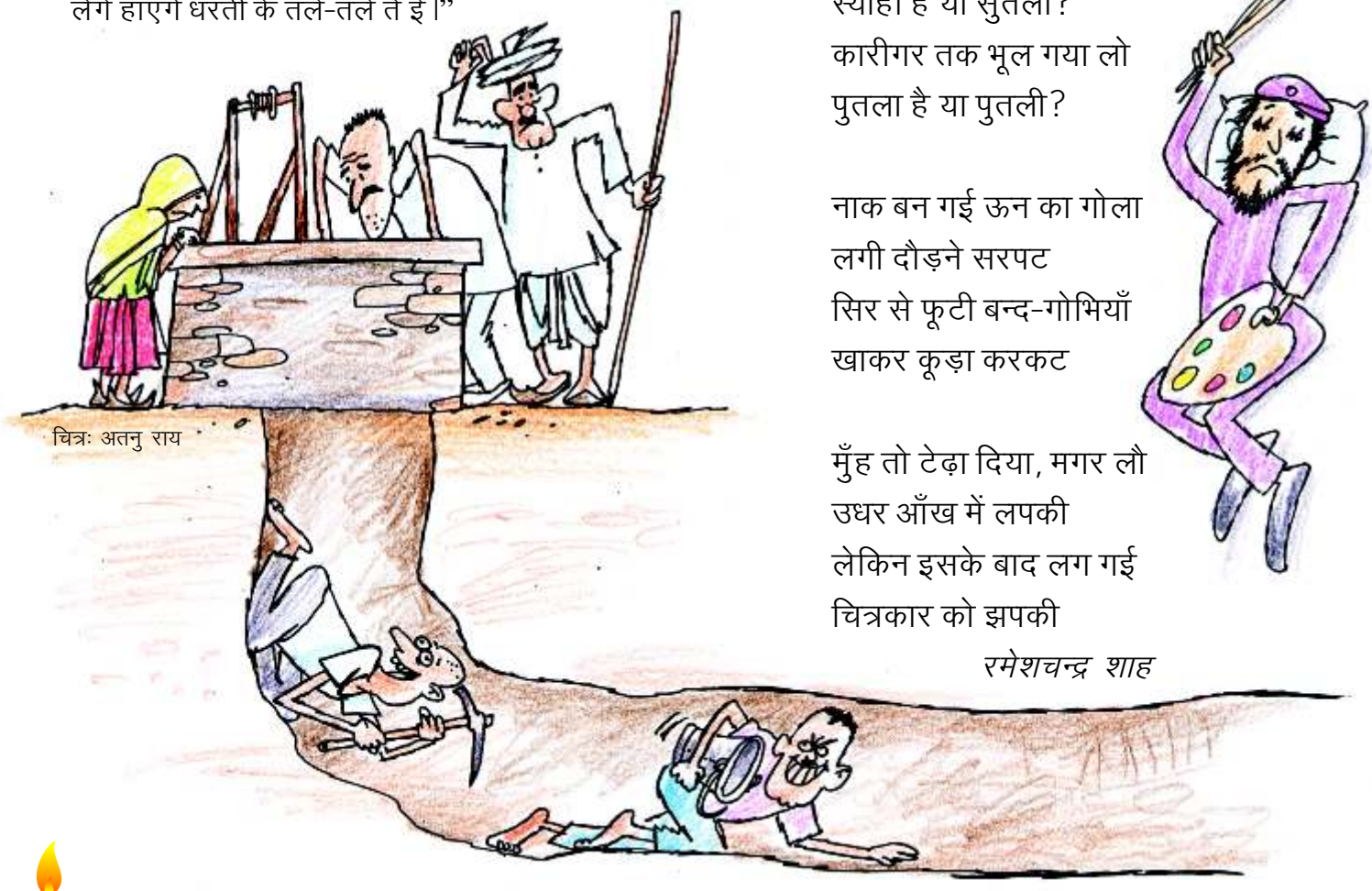

चित्रः अतनु राय

अभी ढूँढें झाड़ी

एक दो दस
तीतर की छूटी बस
अब जाएँ कैसे
इस गाँव में से
जंगल बड़ी दूर
थक के होगा चूर
कल पकड़ेंगे गाड़ी
अभी तो ढूँढे झाड़ी

प्रभात

बुनते-बुनते

इसे बनाना कहें कि बुनना
स्याही है या सुतली?
कारीगर तक भूल गया लो
पुतला है या पुतली?

नाक बन गई ऊन का गोला
लगी दौड़ने सरपट
सिर से फूटी बन्द-गोभियाँ
खाकर कूड़ा करकट

मुँह तो टेढ़ा दिया, मगर लौ
उधर आँख में लपकी
लेकिन इसके बाद लग गई
चित्रकार को झपकी

रमेशचन्द्र शाह